जीवन परिचय पोलो फ्रेरे (Paulo ferire)

Paulo ferire का जन्म 19 सितम्बर 1921 को रेसिफ ब्राजील में एक मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। 1930 के दशक की महामंदी के दौरान फ्रीयर गरीबी और भूख से परिचित हो गया था। 31 october 1934 को उनके पिता की मृत्यु हो गई। सामाजिक जीवन ने अन्य गरीब बच्चों के साथ फुटबॉल उठाते हुए खेलना शुरू किया जिनसे उन्होंने एक बहुत कुछ सीख लिया। ये अनुभव गरीबों के लिए अपनी चिंताओं को आकार देंगे और अपने विशेष शैक्षिक दृष्टिकोण का निर्माण करने में मदद करेंगे। फ्रीयर ने कहा कि गरीबी और भूख से सीखने की उनकी क्षमता पर गंभीर रूप से प्रभावित हुआ है।

फ्रीयर ने 1943 में रेसिफ विश्वविद्यालय में लॉ स्कूल में दाखिला लिया। उन्होंने दर्शन और विशेष रूप से अभूतपूर्व और भाषा के मनोविज्ञान का अध्ययन किया। 1946 में फ्रीयर को पर्नम्बुको की स्थिति में सामाजिक सेवा के शिक्षा और संस्कृति विभाग के निदेशक नियुक्त गया थे।

OCTOBER
M T W T F S S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31

Page-2

शिक्षा दर्शन

शिक्षा दर्शन के जगत में पाओलो फ्रेरे का नाम बड़े अदब से लिया जाता है वे अपने देश में चले साक्षरता अभियान से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। इस दौरान उन्होंने अपने देश की विभिन्न भागों का दौरा किया, इस दौरान उन्होंने काम के वक्त होने वाले शोषण को गहराई से देखा समझा और उसका विश्लेषण किया। इसके बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि शिक्षा भी राजनीति है। जिस तरह राजनीति वर्गीय होती है उसी तरह शिक्षा भी वर्गीय होती है।

उनकी एक किताब का प्रकाशन ग्रंथ शिल्पी ने किया है इसका शीर्षक है 'आलोचनात्मक चेतना के लिए शिक्षा' इस किताब का पहला हिस्सा 'स्वतंत्रता के व्यवहार के रूप में शिक्षा' है।

फ्रेरा ने कहा है कि निरंकुश राज्य और सम्पन्न लोग नहीं चाहते है कि किसान पढ़ने कि प्रक्रिया में उठ सके है। शिक्षा का आदर्श दलितों किसानों, मजदूरों को साक्षर व शिक्षित करना आवश्यक है। मानवतावाद का यही सन्देश है।

मानवतावाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम जर्मन शिक्षाविद् एफ. जे. नीथ हैमर ने इसे शिक्षा दर्शन के अर्थ में किया था जो विद्यालय पाठ्यक्रम के रूप में क्लासिक साहित्य के पठन - पाठन का समर्थन करता है। फ्रेरा ने जिस मानवतावाद को अपनाया वह आज के मजदूर व दलित वर्ग के प्रति प्रेम से परिपूर्ण है।

पाठ्यक्रम (curriculum) —

फ्रेरा ने पाठ्यक्रम में आमूल-चूल परिवर्तन की बात की है। वे पहले ईसा मसीह से प्रभावित थे और धार्मिक पुस्तकों को पठन - पाठन में आवश्यक समझते थे, बाद में वे मार्क्स की ओर आकर्षित हुए किन्तु मार्क्स के सिद्धान्तों को वे आँख बंदकर नहीं स्वीकार कर पाए।

फ्रेरा सार्त्र, एरिक फ्रोम, माओ, मार्टिन लूथर किंग के विचारों को पाठ्यक्रम का अंग बनाना चाहते थे। जैसे गणित, इतिहास, भूगोल को को पढ़ाना है किन्तु बालक इनमें फेल हो जाते हैं। अतः हमें इसको सरल करके पढ़ाना है।

फ्रेरा पाठ्यक्रम को पुनर्गठित करना करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कहा कि दार्शनिकों कला

शिक्षकों, भौतिक विज्ञानियों, समाजशास्त्रियों की सहायता की जरूरत है। शिक्षा, कला, नीतिशास्त्र, मानव अधिकार, खेल, सामाजिक वर्ग, भाषा, दार्शनिक विचारधारा जैसी ज्ञान की शाखाओं पर चर्चा होनी चाहिए।

फ्रेरा कहते हैं कि पाठ्यचर्या को जड़, असंवेदनशील एवं अनुपयोगी नहीं होना चाहिए। पाठ्यक्रम में समाजवाद व साम्यवाद के विचारों को आदरणीय स्थान देना चाहिए। फ्रेरा लोकतंत्र के वास्तविक स्वरूप को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहते थे न कि उसके वर्तमान विकृत रूप को।

शिक्षण विधि (Method of teaching)

फ्रेरा के अनुसार "साक्षरता का कोई अर्थ तभी है जब निरक्षर व्यक्ति दुनिया में अपनी स्थिति, अपने काम और इस दुनिया में बदलाव लाने की अपनी क्षमता को लेकर सोचने लगें।" यही चेतना है। उन्हें पता चले कि दुनिया उनकी है प्रभुत्वसम्पन्न वर्ग की नहीं।

साक्षर करने की शिक्षण विधि जो फ्रेरा ने अपनायी वह आश्चर्यजनक थी, उनके अनुसार कुछ

शब्द ऐसे होते है जिन्हें प्रजनक या उत्पादक शब्द कहना चाहिए। झोपड़ी - पुड़ी, पर्ण, जमीन, साइकिल, आदि ऐसे ही शब्द है ये उत्पादक शब्द भाव तथा अर्थ से स्पन्दित होते है। ये शब्द सीखने वाले व्यक्तियों के समूह की इच्छा, आकांक्षा, माँग, चिन्ता, स्वप्न कुण्ठा को व्यक्त करते है।

पुर्तगाली भाषा के मूल स्वनिम सिखाने के लिए फ्रेरा के अनुसार पन्द्रह या अठारह शब्द प्रर्याप्त प्रतीत होते है। यहाँ पर फ्रेरा के कथन से उदाहरण दिया जा रहा है।

जैसे - एक निरक्षर ने कहा - तू जाने (तुम पहले से ही पढ़ते हो)

इस प्रकार फ्रेरा बच्चों की जिज्ञासा को शान्त करते हुए अपनी बात को मनोवैज्ञानिक ढंग से समझाते चलते है। किसानों को शिक्षित करने की फ्रेरा की विधि को आज सारा संसार प्रशंसा की दृष्टि से देखता है। शिक्षण विधि ऐसी होनी चाहिए जिससे सीखने वाला अपनी जिन्दगी के अनुभव से दूर न हो। उसे ऐसा न लगे की उसकी भाषा संस्कृति और परम्परा का शिक्षा निषेध करती है।

OCTOBER
M T W T F S S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27
28 29 30 31